धर्म जीवन

मार्च 2007

- हम अपनी धर्म समाज के लिए कैसे हानिकारक बन जाते हैं?
- मेरा सौभाग्य या महा सौभाग्य
- कल्याण सत्संग
- माता पिता सन्तान दिवस की विशेष सभा
- देवात्मा का सच्चा सेवक बन सकूं
- चण्डीगढ़ कोचिंग सेंटर में माता पिता दिवस
- शुभ संग्राम

शुभ संग्राम

डबवाली :- 5 फरवरी को श्रीमान बलदेव सिंह जी चण्डीगढ़ से रवाना होकर संगरूर पहुँचे। वहाँ से श्रीमान सीता राम जी को साथ लेकर डबवाली मन्दिर में पहुँचे। श्रीमान हरनेक सिंह जी मास्टर साहिब और उनके पोते को मिले। काफी समय हितकर बातचीत की। मास्टर हंसराज जी की सीवरेज कनैक्शन लेने के लिए जरूरी रकम दी। और मन्दिर सम्बन्धी बातचीत के बाद श्रीमान जी एक कनुनगो के पास विज़िट करने के लिए नए। उनको मन्दिर में आकर सभा सुनने के लिए प्रेरित किया। वह मिलकर बहुत खुश हुए और श्रीमान जी के साथ ही मन्दिर में आ गए। वहां आगे भी आने का वचन दिया। कई वर्षों से वह शराब, मांस अण्डे आदि से बचे हुए हैं। श्रीमान सीता राम जी उसके बाद संगरूर वापिस चले गए।

थराजवाला:- यहां रात को 8 बजे एक सभा की गई, जिसमें श्रीमान बलदेव सिंह जी वा उनके तीन परिवारों के जन आकर शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि धर्म पाए बिना जीवन व्यर्थ जाता है और धर्म अच्छे व्यवहारों का नाम है। अगर व्यवहार अच्छे नहीं तो पूजा-पाठ, जप-तप, सब व्यर्थ हैं। गुरु अपने प्रभावों के द्वारा योग्य जनों को अच्छे इन्सान बनाते हैं। पापों को छुड़वाते है। अच्छे पुत्र, अच्छे भाई बहन, पति पत्नी, नौकर मालिक और अच्छे पड़ोसी बनाते हैं। कल्याण सत्संग में आकर लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया गया।

6 फरवरी को श्रीमान बलवन्त सिंह जी के घर उनके तीनों बच्चों के परिवारों को लेकर सभा करवाई गई। कई और जन भी आकर शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि नई रोशनी, नये आविष्कार, नये ज्ञान, नई मशीनरी आदि सब बातों का पहले विरोध हुआ है और आज तक भी हो रहा है। यह कारज भी नया ज्ञान वा नई रोशनी देता है। हमें बताता है कि मनुष्य के शरीर, दिमाग वा मन को ठीक रखने के नियम है। यदि नियम पूरे करो प्राप्ति आवश्यक है। सेहत, मान्सिक उन्नति वा हार्दिक उन्नति के नियम बताए गए। देवात्मा मनुष्य का सब पक्षों में भला करते हैं। उनके दर पर आकर अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए। सब ही सभा से काफी प्रभावित हुए। एक जन ने अपने आप शराब वा मास छोड़ने की प्रतिज्ञा की। 100 रू० दान भी दिया। 110 रू और दान प्राप्त हुआ।

रात को एक और सभा की गई। इसमें बताया गया कि मनुष्य अन्धेरे का जीव है। नाना पक्षों में अन्धेरे में रहकर बहुत हानियां उठाता है। खाने पीने के सम्बन्ध में अन्धेरा, विद्या के सम्बन्ध में अन्धेरा, कमाई के सम्बन्ध में अन्धेरा, अपने आपके सम्बन्ध में अन्धेरे का ब्यान किया गया। बताया गया कि कैसे पढ़ाई न करके, किसी ने राज को ठुकराके, किसी ने अन्धेरे में गल्त ईलाज करवा के हानियां उठाई हैं। जीवन लक्ष्य सम्बन्धी अन्धेरे के कारण सारा विश्व हानि उठा रहा है। गुरु महाराज मनुष्य को अन्धेरे से निकाल कर सर्वोच्च ज्योति देकर बरकतों से माला माल करते हैं।

7 फरवरी सुबह 10.30 बजे एक सभा की गई। जिसमें 20-22 स्त्री पुरुष आकर शामिल हुए। सभा में बताया गया कि पहले पत्थर के बर्तन थे, फिर तांबा, कांसी और पीतल आदि के बन गए फिर उन पर कलई होने लग गई। आज नये से नये बर्तन देखने को मिलते हैं। परन्तु मनुष्य आज भी पीपल, सांप आदि की पूजा करता है। नाम जपने को धर्म समझता है। सेहत के नियमों की ही तरह धर्म प्राप्ति के भी नियम हैं। धर्म

बाकी पेज़ 16 पर

धर्म जीवन

खण्ड 19 अंक 3
मार्च 2007
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

हम अपनी धर्म समाज के लिए कैसे हानिकारक बन जाते हैं?

साथियों! क्योंकि वही समाज धर्म समाज हो सकती है कि जिसकी शिक्षा एक ओर नेचर के सच्चे नियमों और उसकी सच्ची घटनाओं पर आधारित हो और दूसरी ओर वह अपने मैंबरों को जीवनों में उनकी योग्यता के अनुसार सच्चे अर्थों में उच्च परिवर्तन लाने के हेतु हो। इसलिए इस पैमाने के अनुसार एक देव धर्म ही सच्ची धर्म समाज है और हो सकती है। इसके भिन्न नेचर के सत्य नियमों और उसकी सत्य घटनाओं के विरुद्ध इस पृथ्वी पर जितने प्रकार के कहलाने वाले "धर्म मत" प्रचलित हैं, वह सब के सब पूर्ण झूठे हैं। इन झूठे मतों के आधार पर जो समाज वा सोसाइटियां बनाई गई हैं, वह सच्ची समाजें वा सोसाईटियां हरगिज़ नहीं हो सकती, इस प्रकार देव धर्म ही सच्ची समाज वा सोसाइटी है। इस धर्म समाज का जिन जिन को अंग बनने का सौभाग्य प्राप्त हो जाए, वह निश्चय सौभाग्यवान जन है। अब जहां तक एक तरफ इस सौभाग्य की जिम्मेदारी को ठीक ढंग से पूरा करने के लिए किसी जन के लिए बेहद बरकतों का भण्डार खुल जाता है और खुल सकता है, वहां दूसरी तरफ इस सौभाग्य की बेकदरी करने से उस जन के लिए वह वह तबाही पैदा होती है और हो सकती है, जो और किसी प्रकार भी नहीं हो सकती। इसलिए ऐसी महाहितकर समाज का अंग बनकर एक-एक जन अपनी जिन-जिन नीच गतियों के द्वारा अपने लिए और उसके लिए महा हानिकारक वजूद सिद्ध होता है और हो सकता है, इसके सम्बन्ध में सही जानकारी पाने और उनसे मुक्त होने के योग्य बनना धर्म समाज के प्रत्येक सदस्य के लिए अति आवश्यक है।

धर्म समाज के सदस्यों की जो जो नीच गतियां उसके लिए व अपनी धर्म समाज के लिए विशेषकर हानिकारक बनती हैं और बन सकती हैं, वह मोटे तौर पर यह हैं :-

1) **स्वार्थ का महा नीच भाव** :-साधारणत: एक एक मनुष्य जन्म काल से ही स्वार्थ की बहुत प्रबल प्रकृति लेकर पैदा होता है। वह जिस प्रकार माता पिता, भाई बहन और पति पत्नी आदि के सम्बन्ध में अपनी एक या दूसरी सुख लालसाओं की तृप्ति चाहता है और मुख्य तौर

पर वह अपने स्वार्थ के कारण उन सम्बन्धों में बन्धता है, उसी प्रकार धर्म समाज में आकर उसकी यह लालसा रहती है कि धर्म समाज भी उसकी एक वा दूसरी सुख लालसा को पूरा करने का साधन बने, अर्थात् यदि उसको नौकरी की आवश्यकता है, उसको प्राप्त करने में सहायता करें, यदि उसको कर्ज़ा लेने की आवश्यकता है, तो धर्म समाज से उसको कर्ज़ा मिल जावे, यदि उसको किसी रोग या मुकद्दमे में सहायता की आवश्यकता है तो धर्म समाज से उसको वह सहायता मिल जावे, यदि उसे अपनी या अपनी सन्तान की शादी की आवश्यकता है, तो उसमें उसकी सहायता हो जाए, यदि उसे मकान, खाने-पीने या कोई वस्तु या किसी कपड़े, पुस्तक आदि की आवश्यकता है, तो इस सम्बन्ध में समाज से उसे मुफ्त सहायता मिल जावे। यह सब इच्छाएं स्वार्थ की इच्छाएं हैं। जो जन इन इच्छाओं को रखकर धर्म समाज से सम्बन्ध बनाता है, या बनाना चाहता है, वह ऐसी अवस्था रखकर, स्वयं भी दिन पर दिन नीच बनता है और धर्म समाज के लिए भी हानिकारक सिद्ध होता है। उसे धर्म समाज के साथ सम्बन्ध इस आधार पर रखने की आवश्यकता है कि उस धर्म समाज के भीतर भगवान देवात्मा के देव प्रभावों के द्वारा जो कार्य हो रहा है, वह संसार में सबसे आला कारज है, इसलिए किसी भी भले मनुष्य का यह मुख्य कर्त्तव्य है कि वह ऐसे उच्च कोटि के काम का साथी बने और उसमें सेवाकारी हो। दूसरा, धर्म समाज के भीतर भगवान देवात्मा के देव प्रभावों का जो वास्तविक रूप में कार्य हो रहा है, वह उसके आत्मा की भलाई व रक्षा व उन्नति के लिए जान और प्राण की चीज़ हैं। इसलिए उनके देव प्रभावों की प्राप्ति के निमित उसको धर्म समाज के साथ अपना गहरा सम्बन्ध अनुभव करने की आवश्यकता है। यह सत्य है कि इस प्रकार के उच्च भावों के आधार पर धर्म समाज के साथ सम्बन्ध स्थापन होने से एक-एक अधिकारी मनुष्य को आत्मिक बेबहा लाभों के अतिरिक्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक कई प्रकार की और बेबहा बरकतें भी बहुत कुछ मिलती हैं, परन्तु उसके सामने मुख्य रूप से आत्मिक मुख्य लाभ ही होना चाहिए। जो जन इसके विरूद्ध चलते हैं, वह जैसे स्वयं महा हानि उठाते हैं, उसी प्रकार धर्म समाज के लिए भी महा हानिकारक सिद्ध होते हैं। इस हानि से हर अधिकारी आत्मा को बचने की आवश्यकता है।

2) निन्दा का महा नीच भाव :- जैसे एक-एक भेड़ और मक्खी गन्दगी खाने में ही तृप्ति महसूस करती है, उसी प्रकार कितने ही मनुष्यों की आत्मिक प्रकृति ऐसी बिगड़ जाती है कि उन्हें दूसरों के सच्चे वा झूठे अवगुणों के सम्बन्ध में सोचने और दूसरों के पास वर्णन करने में बहुत तृप्ति अनुभव होती है। ऐसी नीच प्रकृति रखने वाले मनुष्य धर्म समाज में आकर भी कई सूरतों में इस नीच प्रकृति के कारण अपनी नीच तृप्ति करने का यत्न करते हैं, जो उनके स्वयं के लिए और समाज के लिए महा हानिकारक चीज़ है। धर्म समाज में जो जन आते हैं, वह फरिश्ते नहीं होते, वह भी भिन्न-भिन्न कमियां अपने भीतर रखते हैं, यह तो भगवान देवात्मा की शक्तियों में ही अजीब जादू है कि उनको आत्मिक पतन की हालत से निकाल कर उनके भीतर एक या दूसरे

प्रकार का अति आश्चर्यजनक परिवर्तन पैदा कर दिया है। ऐसे उच्च परिवर्तन प्राप्त जनों का सम्बन्धी बनने का सौभाग्य महा सौभाग्य है। इस सौभाग्य को पाकर प्रत्येक जन का जो महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य है वह यह कि एक ओर ऐसे धर्म सम्बन्धियों के सद्‌गुणों और उपकारों पर चिन्तन करके अपने भीतर उनके लिए श्रद्धा और कृतज्ञता के भावों को जागृत करे और बढ़ाए और दूसरी ओर ऐसे धर्म सम्बन्धियों के सम्बन्ध में अपने भीतर जो कमी और खराबी हो उसे सामने लाकर हानि परिशोध के साधन करे। परन्तु एक-एक नादान अपने जीवन का शत्रु मनुष्य उसके विरुद्ध यह अमल करता है कि दूसरों के सच्चे वा झूठे अवगुणों को अपने सामने लाता और दूसरों के पास वर्णन करता है। इससे अपने आप को ज़हर से भरने के साथ-साथ समाज की महा हानि का कारण भी बनता है और अपने आपको झूठ-झूठ अवगुणों से रहित और कई प्रकार के झूठे सद्‌गुणों से सुशोभित विश्वास करके अकड़ता रहता है। यह सारी अवस्था धर्म समाज के किसी अंग के लिए बहुत खतरनाक है। यह बात बेशक हितकर है कि हमारे किसी छोटे या बड़े धर्म सम्बन्धी में यदि कोई खराबी हो, तो उसके लिए हमदर्दी के भाव से भरकर, उसको ठीक करने का जो सम्भव हो यत्न करना चाहिए, उसकी बुराई का साथ देने या उस पर पर्दा डालकर पाप के भागी नहीं बनना चाहिए। इस पक्ष में जो सही ईलाज है, वह यह कि अपने किसी साथी की किसी बुरी बात को समाज के किसी जिम्मेवार व्यक्ति तक (सबूत सहित) पहुँचाओ कि जिसके साथ उसके ठीक होने की सम्भावना हो सकती है। उसके विरुद्ध किसी साधारण सेवक के पास या किसी गैर-सामाजिक जन के पास उसका ज़िकर करके सिवाए अपना बेड़ा ग़रक करने और दूसरों को समाज से फाड़ने के और कोई भला परिणाम नहीं निकल सकता। जिन जनों को निन्दा की भयानक बिमारी लगी होती है, वह इस कोढ़ से जहां आप मरते रहते हैं, वहां दूसरों को भी यह भयानक कोढ लगाकर उनके पक्के दुश्मन सिद्ध होते हैं। जिन-जिन जनों को अपनी ऐसी अवस्था का बोध पाना सम्भव हो, उन्हें उसका बोध पाने और उससे मुक्त होने की अतिशय आवश्यकता है।

(श्रद्धेय श्रीमान धर्म बल जी का एक पुराना लेख)

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

मेरे सौभाग्य या महा सौभाग्य

वैसे तो मेरे जन्म से पहले ही महान उपकारियों की कृपा से मेरे पिता जी को और फिर माता जी को अद्वितीय आविर्भाव परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शरण प्राप्त हो गई थी परन्तु बचपन में इस बात की न कोई समझ थी और न ही कोई कदर। उल्टा चढ़ती जवानी के जोश और अंह का पुतला होने के कारण, मैं इस सौभाग्य की बहुत बेकदरी और निरादर करने का घोर पाप करता रहा हूँ। हां, कई वर्ष भिन्न-भिन्न प्रकार के मिथ्या साधन वा पूजा पाठ करने में धक्के खाता रहा हूं और पिशाच कामनाओं का भागी बनता रहा हूँ।

18 - 19 वर्ष की उमर में मुझे सहायकारियों की कृपा से, "मुझ में देव जीवन का विकास" नामक ग्रन्थ को प्राप्त करने और उसका साधारण पाठ करने का पहले पहल शुभ अवसर प्राप्त हुआ। मेरे महा अबोधी होने के बावजूद उस महान ग्रन्थ के पाठ ने मुझे परम पूजनीय भगवान के विषय में जानना, उनके मिशन की महानता को देखना अपना बहुत बड़ा सौभाग्य अनुभव हुआ। मैं पूजनीय भगवान की फोटो को प्राप्त करके, उसे देखने का सौभाग्य पाकर बहुत कृतार्थ हुआ करता था। उस समय में कुदरत का शुक्रगुजार होता था कि यदि मेरी आंखें न होती, मैं अन्धा होता, तो मैं ऐसे महान सत्गुरू के फोटो द्वारा भी दर्शन कैसे कर सकता था। मैं आंखें देने वाले और सम्भालने वालों का कृतज्ञ अनुभव करता रहता था। साथ ही मुझे वैज्ञानिकों का भी बड़ा उपकार महसूस होता था, जिन्होंने कैमरे का आविष्कार किया जिससे पूजनीय भगवान की सही सही फोटो लेनी सम्भव हो सकी। कैमरे के बिना पूजनीय भगवान की सुन्दर छवि के दर्शन भी असम्भव थे। कैमरा बनाने वाले महान वैज्ञानिक भी उपकारी नज़र आने लगे। उन्हें मन मन में धन्यवाद भी देता रहता था। विशेष रूप से यह भी सोचता था कि और किसी भी गुरु की तस्वीर असली नहीं, सब कल्पित हैं। गुरु नानक देव जी साहिबान, श्री रामचन्द्र जी, श्री कृष्ण जी, महात्मा बुद्ध जी का बुत, ईसा मसीह साहिब, जैन गुरु साहिब, सब की फोटो असली नहीं कल्पित है और तरह तरह की है। परन्तु परम पूजनीय भगवान देवात्मा की फोटोज़, सब असली हैं। उनकी छवि को देखकर जब आंखें बन्द करते हैं, तो हमारी कल्पना में गुरु का भौतिक रूप भी बनता है, उसे हम प्रणाम करते हैं, इसमें किसी कल्पना की गुजांईश नहीं और न ही मनघडंत है।

बहुत वर्ष पहले बेशक मुझे देवात्मा बहुत महान और यकता दिखाई देते थे, उनकी प्रकाशक शुभ और सत्य अनुराग की शक्तियों की कुछ मान्सिक समझ भी आ गई थी। उन जैसा कोई और दिखाई नहीं देता था। परम पूजनीय भगवान देवात्मा का निज का स्वरूप, उनकी शिक्षा, उनका अद्वितीय लक्ष्य और उनका कारज विलक्षण दिखाई देते थे और उनके कारज में काम आना अपनी बहुत बड़ी खुशकिस्मती दिखाई देती थी। इससे पाक और सच्ची खुशी से हृदय भर जाता था। मैं इसी अवस्था में चाव भाव से गुरु मिशन में काम करता रहा और अपना भला करने का संग्राम करता रहा। गुरु मिशन का उच्च श्रेणी का सेवक, फिर कर्मचारी भी बन गया, फिर महान आत्माओं ने और ऊँचे पदों पर

उन्नत कर दिया। मुझ से प्रचार का काम करवाया। मैंने लेख लिखे, पत्रिकाएं लिखी, शिक्षा संस्थानों और मन्दिरों में सेवाकारी होता रहा। महोत्सव पर विशेष सभाएं करवाने का शुभ अवसर मिलता रहा, परन्तु मुझे देवात्मा की महानता चाहे कितनी ही सुन्दर दिखाई देती थी, पर मुझे 60-65 वर्ष की उमर तक देवात्मा के देवरूप का पता भी न चला। मैं मान्सिक समझ के साथ जितना कुछ देवात्मा महान दिखाई देते थे, उस महानता को देख कर ही तृप्त होता रहा।

प्रश्न पैदा होता है कि मुझे इतनी देर इतना समाज का काम करके, इतनी देर गुरु के कारज में भाग दौड़ करके देवात्मा के प्रकृत रूप के दर्शन क्यों नहीं हुए? देव रूप के दर्शन देवात्मा की विशेष मात्रा में देव ज्योति की प्राप्ति से ही सम्भव है, केवल मान्सिक ज्योति वा सात्विक पूंजी में देवात्मा महान तो बेशक दिखाई देते हैं, परन्तु देवरूप की प्रकृत झलक दिखाई नहीं देती। फिर प्रश्न यह पैदा होता है कि क्या मुझे देव ज्योति कभी भी नहीं मिली थी? देवात्मा के देव प्रभाव साधनों वा सभाओं से मिलते तो थे, वह मेरी रक्षा वा भला मेरी कुछ सात्विक पूंजी को जाग्रित करने का काम भी करते थे, उससे मेरा भला अवश्य होता था, जिसके कारण मैं आज तक मिशन में कुछ चलता फिरता रहा हूँ। देव ज्योति की आवश्यक मात्रा मुझे कभी नसीब नहीं हुई थी, जो मुझे देवरूप की प्रकृत झलक नज़र आ सकती। उस मात्रा में देव ज्योति इतने लम्बे समय तक क्यों नहीं प्राप्त हुई? इसका बड़ा और ठोस कारण मेरी अपने अंह-अनुराग के प्रति घोर अन्धता और बेसुधी और अंह का हृदय पर ज़ोरदार अधिकार। जैसे घोर काली घटाओं में सूर्य चढ़ा होकर भी दिखाई नहीं देता, उसी प्रकार मेरे हृदय के ऊपर घमंड, नीच घृणा और स्वार्थ की मोटी-मोटी परतों के कारण मुझे देव ज्योति नहीं मिलती थी और न ही देवरूप दिखाई देता था।

मेरे महा सौभाग्य कि कोई 23 वर्ष पहले मुझे सहायकारी शक्तियों की कृपा से अपने साधन में ऐसे प्रभाव मिले जिन्होंने मुझे अपने नीच जीवन सम्बन्धी चिन्तन और लिखने के साधनों में लगा दिया। उससे धीरे-धीरे मेरे ऊपर यह महा उपकार होने लगा कि मुझे अपने अंह की भयानकता के दर्शन होने लगे तो उससे बचने का संग्राम होने लगा। इस संग्राम के कुछ वर्ष जारी रहने से (जो टूटा फूटा अब भी जारी है) मुझे गुरु महाराज की कुछ-कुछ ज्योति मिलने लगी जिससे मेरे ऊपर किसी अंश देवात्मा के देवरूप के अति सुन्दर सूर्य रूप की झलक दिखाई देने लग पड़ी, जो मेरी आंखों से अब तक ओझल ही रही थी।

किसी अंश मात्र देवरूप के दर्शनों से, मेरा प्रकृत नीच रूप भी दिखाई देने लगा और उसके कम होने के नियम भी पूरे होने लगे। जिस मात्रा में मेरा यह नीच जीवन घटा है या घटता है, उसी मात्रा में मेरे ऊपर देवरूप का महा सुन्दर सूरज चमका है। मैं विस्मित हूं, हैरान हूँ धन्य-धन्य हूं कि मेरे जैसे तुच्छ और नीच को कुछ-कुछ देवरूप का लश्कारा दिखाई देता है। मैं इस सौभाग्य को शब्दों में ब्यान नहीं कर सकता। गुरु चरणों में सजदा ही कर सकता हूं, बस!

अब देव रूप मुझे मेरी तुच्छ अदना हस्ती का ही नियम नज़र आता है, जैसे हवा, पानी, खुराक रोशनी, मेरी जिन्दगी के नियम है, जीवन दान देने वाले हैं, उतना ही आवश्यक क्या मेरे लिए और क्या किसी और हस्ती के लिए, देवरूप जीवन दायक है। जैसे हवा, पानी के बिना किसी का

गुज़ारा नहीं, कोई जिन्दा नहीं रह सकता, उसी प्रकार देवरूप के सम्बन्ध के बिना कोई सुरक्षित नहीं रह सकता, रक्षा प्राप्त नहीं कर सकता, पनप नहीं सकता। देवरूप के बिना न मेरा और न किसी और का निर्वाह हो सकता है। देवरूप की तासीरों के बिना मेरा विनाश निश्चय है, हानि निश्चय है, दुख और बर्बादी निश्चय है। हवा की तरह देवरूप मनुष्य के लिए आवश्यक अंग है। इस देवरूप की निकटता जैसा कोई सौभाग्य नहीं, इस रूप से उदासीनता या दूरी जितनी कोई बदकिस्मती नहीं। देवरूप मनुष्य के प्राण ही हैं। इसके बिना लोहार की मुर्दा मशक की तरह ही हमारे सांस चलते हैं।

प्रत्येक देवरूप का नाम लेने वाला (पापों और मिथ्या का त्यागी वा देवात्मा का विश्वासी) मुझे प्यारा लगता है, अपना लगता है। वह चाहे अच्छा समझे या बुरा व्यवहार करे, चाहे निकटी हो या विरोधी। वह सब हमारे अपने-अपने भावों की लीला है। परन्तु वह मेरा अपना है, खास अपना कोई गैर नहीं। उसमें देवरूप की कुछ लौ, कुछ महक अवश्य संजोई होती है। उनका प्यार मुझे देवरूप के निकट करता है। उनके प्यार व सत्कार के बिना मैं उन्हें शोभित करने वाले स्रोत को कैसे प्यार कर सकता हूं? उनका दोषी होकर, मैं देवात्मा का दोषी बने बिना नहीं रह सकता। जीवन के मुख्य नियम का ही घातक बनता हूं।

देवरूप मेरे ऊपर सब सम्भव हितों का सावन है। देवरूप मेरे ऊपर उचित सुखों का सावन है। इसलिए मेरे सारे हित और सारे सच्चे सुख देवरूप के साथ जुड़े हैं। देवरूप उक्त सब का अनन्त स्रोत है।

जैसे सूरज की तुलना किसी चिराग, तारे या चाँद के साथ नहीं की जा सकती, उसी प्रकार देवरूप की तुलना किसी भी सुन्दर से सुन्दर, महान से महान हस्ती के साथ नहीं की जा सकती। देवात्मा हमारी रूह के जान और प्राण हैं।

देवरूप वह मानवता का सच्चा हित करता है, जो न पहले किसी ने किया था और न करना सम्भव था, न अब कोई कर रहा है और न कर सकता है।

अब समझ आती है कि गुरु महाराज यह दावा कैसे कर सकते थे कि सरदार साहिब सरदार जमीयत सिंह जी को या भाई मोहन देव जी को हम से कोई नहीं छीन सकता? क्योंकि उनके अंह चूर हो चुके थे, उनको देवात्मा का देवरूप, उनकी ही ज्योति में चमकता था। उस चमक को देखने वाले किसी भी कीमत पर उन चमकने वाले देवत्व के सूरज से कैसे दूर हो सकते थे।

गुरु महाराज अपने कर्मचारियों को फरमाया करते थे कि तुम्हें देवात्मा के सौभाग्य को याद करके खुशियों से भरकर नाचने की आवश्यकता है। अब इस फरमान की भी समझ आने लगी है।

देवरूप की महानता किसी प्रकार भी वर्णन नहीं हो सकती। "आपकी महिमा है लासानी, मुश्किल हैं वह कहके सुनानी" मैं तो इसी बात से ही धन्य-धन्य हूं कि मेरे जैसे तुच्छ, नीच, मन्द बुद्धि, ग्रामीण, असभ्य जैसे वजूद को किसी देवरूप की आकर्षणीय झलक के दर्शन करने नसीब हो गए।

मैं अपने सौभाग्य की कोई सीमा नहीं देखता कि मेरे भीतर देवरूप के दर्शनार्थ कुछ न कुछ आंख पैदा हो सकी। मैं अपने माता पिता और अन्य पूर्वजों को धन्यवाद देता नहीं थकता कि जिनके सच्चे तपों वा त्याओं से मुझे विरासत में ऐसी पूंजी मिली, जिस के कारण गुरु महाराज के घोर तपों, त्यागों और जान न्यौछावर करके जो

ज्योति विकसित हुई वह महा विलक्षण ज्योति की किरण प्राप्त करने, और उस नियम को पूरा करने वा सहायकारियों की दुर्लभ सहायता से उसे प्राप्त करने का अधिकारी बन सका।

यदि मुझे अपना भयानक अंह ही दिखाई न देता, जैसे बड़ी उमर तक दिखाई नहीं दिया और वह पहाड़ की तरह अटल ही रहता, और मैं अटल अंह अनुरागी सारी उमर अन्धा और पागल रहकर दूसरों को बुरा वा खराब कह-कह कर अपना मुंह, माथा तुड़वाकर, घुल-घुल कर नष्ट हो जाता। बाहर की आंखे देने की तरह, उक्त प्रकृति की पूंजी के जो दाता हैं, जिनकी कृपा से मेरे भीतर देवात्मा के देवरूप को देखने की आंख पैदा हुई है, उनका वा अन्य सहाकारियों का, जिन्होंने मुझे धक्के खाते हुए को, मिथ्याओं में फंसे हुए को, बचाने की कृपा की है, उनकी कृपाओं की बारिश का मैं महा अबोधी और बेसुध किस प्रकार धन्यवाद दे सकता हूं। ऐ मेरे उपकारियों, ऐ मेरे हितकारियों आप धन्य हो, जिनके तपों-त्यागों ने मुझे महा सौभाग्यवान बना दिया है। मेरे हृदय की आंखों को देवरूप की अलौकिक छवि प्रकाशित कर रहे हो। जहां देव ज्योति के सूर्य असंख्य बार धन्य-धन्य कहे जाने के अधिकारी है, वहां मेरे भीतर देवरूप को देखने वाली आवश्यक हृदय की आंख पैदा हो सकने की पूंजी के दाता भी धन्य-धन्य हैं।

(बलदेव सिंह)

मनुष्य का कर्म उसके चरित्र का दर्पण

ऐसी आम धारणा है कि खराब चरित्र के लोग यदि अच्छे परिवेश में पलते-बढ़ते तो वे ऐसे नहीं होते। हालांकि यह सच है कि हमारा पालन पोषण और परिस्थितियां इस बात को प्रभावित करती हैं कि हम कौन हैं, खासकर तब, जब हम छोटे होते हैं। परन्तु जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं, उतने ही विकल्प चुनते हैं-या तो भले के लिए या फिर बुरे के लिए। दो लोग एक ही माहौल में बड़े हो सकते हैं, इसके बावजूद एक में ईमानदारी होगी, जबकि दूसरे में नहीं। अंततः आप ही अपने विकल्प चुनने के लिए जिम्मेदार हैं। आपकी परिस्थितियां आपके चरित्र के लिए उतनी ही जिम्मेदार हैं, जितना दर्पण आपके हुलिए के लिए। आप जो देखते हैं, वह सिर्फ आपका प्रतिबिंब होता है। पुराने जमाने में ईंट बनाने वाले, नक्काशी करने वाले और बाकी कारीगर अपने खास निशान का प्रयोग यह बताने के लिए करते थे कि उन चीजों को उन्होंने बनाया है। हर कलाकार का खास निशान उसके चरित्र का प्रतीक था। और जब काम की गुणवता ऊंची होती थी, तभी उस चरित्र का महत्त्व होता था। काम अच्छा होता था तो चरित्र भी अच्छा समझा जाता था और काम खराब होता था, तो उसी हिसाब से चरित्र का मूल्यांकन होता था।

यही बात हमारे बारे में भी सच है। चरित्र उससे आता है, जो हम हैं। परन्तु कुछ लोग यह चाहते हैं कि उनका मूल्यांकन उस बात में न हो जो वे हैं, बल्कि उन पदवियों से या उनके वर्तमान पद से हो, जिन्हें उन्होंने हासिल किया है, चाहे उनका चरित्र कैसा भी हो। परन्तु पद कभी वह हासिल नहीं कर सकता, जो चरित्र कर सकता है।

जॉन सी. मैक्सवेल

कल्याण सत्संग

कल्याण (जिला भटिंडा) में पिछले 30 वर्षों की तरह इस वर्ष भी विशेष सत्संग और माता पिता दिवस 8 फरवरी से 11 फरवरी तक रखा गया। इसके लिए समाज की दोनों पत्रिकाओं में नोटिस निकाले गए और अलग भी 50 - 60 पत्र छापकर पोस्ट किए गए। सभा स्थान की सफाई करवाई गई। लंगर के लिए सहायक स्त्रियां रखी गई। चारपाईयां बिस्तरे आदि का प्रबन्ध किया गया। कई धर्म सम्बन्धियों ने अपने घरों में यात्रियों को ठहराया।

8 फरवरी को इस सत्संग की प्रवेश सभा से पहले ही देहरादून से एक जन और खतौली से नरेन्द्र जी धीमान जी एक साथी को लेकर पहुंच गए। फिर मेरठ जिले से गावों से तीन साथी पहुंच गए। गोनियाना मण्डी से ज्ञान जी और सुखदेव जी अपने पुत्र समेत पहुंच गए। पदमपुर से तीन जन गजसिंह पुर से तीन जन पहुंच गए। उस दिन श्रीमान बलदेव सिंह जी भी पहुंच गए। संगरूर से श्रीमान सीताराम जी, यमुनानगर से श्रीमान वर्मा जी भी 8 तारीख को पहुंच गए थे। इस प्रकार 20 के लगभग यात्री 8 तारीख को पहुंच गए थे।

सबके खाने पीने का प्रबन्ध श्रीमान बलबहादुर सिंह जी के घर किया गया।

8 फरवरी की रात को पहली सभा रखी गई। इसके सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी थे। स्थानीय सेवकों और श्रद्धावानों को मिलाकर 35 के लगभग जन इस सभा में शामिल हुए।

सबसे पहले एक भजन का गान किया गया। फिर सभापति जी ने अच्छे भावों से भरकर सभा की सफलता के लिए सहायप्रार्थना की। फिर बताया गया कि जैसे हमारा भौतिक सूर्य रोशनी और गर्मी का स्त्रोत है, उसी प्रकार अध्यात्मिक जगत में भी देवात्मा सूर्य के रूप में प्रगट हुए हैं। वह रूहानी रोशनी वा तेज के स्त्रोत हैं। उनकी ज्योति शक्ति अधिकारी हृदयों पर आश्चर्यजनक कार्य करती है। नीच जीवन में परिवर्तन आता है। बहुत प्रभावशाली उदाहरण दिये गये। फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि शीशा हमारा मुंह दिखाता है, ऐकसरे, अल्टरा साऊंड, स्कैनिंग, एम आर आई, ऐंजोग्राफी हमारे शरीर के भीतर की अवस्था को दिखाते हैं। हमारी प्रकृति की नीचता को दिखाने के लिए कोई ज्योति नहीं थी। कोई यन्त्र नहीं था। केवल देवात्मा की ज्योति मनुष्य के भीतर की नीचता को दिखाती है और उनकी शक्ति उससे मुक्त करती है। पंडित कृपा राम जी के परिवर्तन के साथ ज्योति और शक्ति का कारज समझाया गया। अगले दिन की सभाओं का प्रोग्राम बताया गया। जय ध्वनि के साथ सभा समाप्त हुई।

9 फरवरी :- सुबह मोगे से श्रीमान अवतार सिंह जी बराड़ अपने सारे परिवार समेत पहुंच गए थे। समराले से बीबी बीरपाल जी 6 जन पहुंच गए। सुबह की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। सभा में बताया गया कि किस प्रकार

पाप के समुन्द्र में मानव रूहें डूब रही हैं। उनको किस प्रकार देवात्मा बचा रहे हैं। उनके प्रभावों से कैसे पापी रूहें बच रही हैं। इस सचाई पेश की गई। बहुत अच्छी हाजरी थी। नये जन बहुत प्रभावित हुए।

शाम को 4 बजे :- एक सभा हुई। इस सभा में और यात्री पहुंच गए। चण्डीगढ़ से मधु सूदन जी, जलधर जी, मल्लेका, केसूपुरा से 23 - 24 जन पहुंए गए। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य डर वा खतरों के डर वा दुख सन्ताप का शिकार होकर दुआ वा प्रार्थना करता है। उन्हें विश्वास है कि ईश्वर वा देवता उनकी प्रार्थना सुनेंगे जो कभी सम्भव नहीं। क्योंकि नेचर में नियमों का राज है। सेहत के, धन कमाने के, विद्या प्राप्त करने के नियम हैं। सम्बन्धों को बेहतर बनाने के लिए भी नियम हैं। धर्म प्राप्ति के भी नियम हैं। बुराई के प्रति घृणा की उत्पति के द्वारा पाप छोड़े जा सकते हैं। भिन्न भिन्न नियमों को समझाया गया। वह घृणा केवल देवात्मा ही संचार कर सकते हैं। उच्च भावों की उत्पत्ति से धर्म जीवन आता है। उनकी उत्पति भी देवात्मा के देव प्रभावों द्वारा ही सम्भव है। सब नियमों को पूरा करके आवश्यक फल प्राप्त किए जा सकते हैं। यह सभा बहुत ज्ञान वर्द्धक थी।

रात को 8 बजे :- फिर एक सभाकी गई। इस सभा में डब वाली, मल्लेका, पदमपुर से तीन जन और आ गए। यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इस में हाज़री और भी अधिक थी। 80 के लगभग स्त्री पुरुष शामिल थे। इस सभा में बताया गया कि धर्म उच्च भावों से आता है। विश्वास या ज्ञान धर्म नहीं होता, उच्च भाव, उच्च विचार धर्म होते हैं। बेईमानी और अपवित्रता के कोढ़ को घटनाओं द्वारा सुन्दर ढंग स्पष्ट किया और से फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने प्रश्न पूछ पूछकर अपना विषय समझाने का प्रयत्न किया। डाक्टरी क्या होती है, मिठाई क्या होती है, उसी प्रकार धर्म क्या होता है, यह उच्च भावों का ही नाम है। देवात्मा के दर पर उच्च भावों का दान प्राप्त होता है। धर्म की कमाई के लिए देवात्मा का दर खुला है। अगली 4 सभाओं का प्रोग्राम बनाकर यह सभा बन्द की गई।

10 फरवरी सुबह की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। धर्म भावों को प्रश्न कर करके समझाया गया। शुक्रगुजारी के उच्च भाव को विस्तार पूर्वक समझाया गया। बताया गया कि दूसरों की मेहरबानियों वा उपकारों को याद करना चाहिए। मेहरबानियों का कर्जा छाती पर बोझ की तरह अनुभव होना चाहिए, जिस कर्ज़े को उतारने का प्रयत्न होना चाहिए। जो कर्जा उतारने का काम करता रहता है, उसके भीतर शुक्रगुजारी है। सभापति जी ने अपने परिवार पर परलोक वासी श्रीमान निर्मल सिंह जी के उपकारों को दिल से याद किया। श्रीमान गुरुवन्त सिंह, श्रीमान गुरुबख्श सिंह जी के उपकारों को दिल को छूने वाले शब्दों में ब्यान किया। पूजनीय भगवान के उपकारों का वर्णन किया। सभापति जी के आंखों से आंसू बह रहे थे, जिससे हाजरीन के दिल भी पिघल रहे थे। अधिकारी जनों को नई आंखें प्राप्त हो रही थीं। हृदय इस प्रभावशाली सभा से आन्दोलित हुए।

दोपहर के समय चण्डीगढ़ टैगोर थिएटर में मनाए माता पिता दिवस का प्रोग्राम बताया गया। परन्तु बिजली के कारण पूरी तरह से नहीं चल सका। शाम को 5 बजे सभा हुई। मौसम बारिश का और ठण्ड का ही चल रहा था। यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। नेचर में असरों का खेल है। अच्छे असरों में मनुष्य नया रंग पकड़ता है और बुरे असरों में घिरकर नीच बनकर जीवन बर्बाद करता है। उच्च असरों में ही मनुष्य की सुरक्षा है। मनुष्य उच्च असरों का मोहताज है। परन्तु मनुष्य असरों के प्रति जागृत नहीं। बेसुध होकर नीच असरों में अपना नाश करता है। यहां पर जो उच्च असरों का मण्डल बन रहा है। आपकी सोच बदल रही है। इरादे बदल रहे हैं। नीच जीवन छोड़ने का उत्साह बढ़ रहा है। कई जनों ने बीड़ी, जरदा, शराब आदि 3 दिनों से छोड़ी हुई है और आगे के लिए छोड़ने का पक्का इरादा बनाया है। परन्तु बाहर के नीच असरों में जाकर हमारे इरादे बदल जाते हैं। बेसुधि आ जाती है। देव असरों की जरूरत महसूस नहीं होती। उच्च असरों की भूख जागने की आवश्यकता है, वरना हमारी खैर नहीं। सभापति जी ने हाजरीन को प्रेरणा की कि प्रण करो कि ऐसे असरों में बार बार आकर लाभ उठाओगे। इस प्रकार बहुत से जनों ने हाथ खड़े किए कि बार-बार आने का यत्न करेंगे।

रात को फिर एक सभा की गई जो श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इस सभा में गोनियाना से 2-3 जन आ गए। इस सभा में भी कृतज्ञता के भाव पर जोर दिया गया। कृतघन्ता की हानियां समझाई गईं। थोड़ा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी ब्यान किया। हरबंस सिंह जी कल्याण ने 500 रूपये दान में दिए। बारिश बहुत अधिक थी, जीपों कारों में लोगों को निवास स्थान पर पहुंचाया फिर भी लोगों में बहुत उत्साह था।

सूचना

पदमपुर राजस्थान में सत्संग
7 मार्च 2007 शाम से आरम्भ होगा।
पाठकगण नोट फरमावें।

-मंत्री

माता पिता सन्तान दिवस की विशेष सभा

11 फरवरी रविवार के दिन देव समाज का स्थापना दिवस था। इसके आखरी दिन पर कल्याण में माता पिता सम्बन्धी विशेष सभा रखी गई। 60 के लगभग जन पहले ही विशेष सत्संग में शामिल होने के लिए बाहर के स्थानों से आ चुके थे। उस दिन सुबह गोनियाना मण्डी से एक रिटायर हैडमास्टर साहिब, उनकी धर्म पत्नी उनके साथ बच्चे और एक सांईस मास्टर एक और साथी के साथ पहुंच गए।

सर्वप्रथम एक श्रद्धामूलक भजन का गान किया गया, फिर पूजनीय भगवान का छवि द्वारा अर्चन किया और देव स्तोत्र का गान और व्याख्या की गई। फिर सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सरस हृदय से 'सहाय प्रार्थना की। उसके बाद श्रद्धा भाजन माता पिता जी' नामक भजन का गान किया गया।

फिर सभापति जी ने अपना ब्यान शुरू करते हुए बताया कि मनुष्य पशुओं से आया है और उसे सम्बन्धों में जीना नहीं आया। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने फरमाया है कि धर्म सम्बन्धों में है। यदि सम्बन्ध हितकर हैं, तो धर्म है, नहीं तो कोई धर्म नहीं। माता पिता का स्थान मनुष्य जीवन में बहुत ऊंचा है। वह मनुष्य के रचयिता हैं, पालन कर्ता हैं, वह रक्षाकर्त्ता व शिक्षा दाता हैं। माता पिता का कुर्बानी भरपूर सम्बन्ध विस्तार पूर्वक बताया गया। कई ठोस उदहरणों से माता पिता की कुर्बानी, कष्ट और दुखों को दर्शाया गया कि कैसे मुसीबतों को पार करके वह हमें पालते हैं। माता पिता की जान निस्सारियों के बदले हमारे क्या कर्त्तव्य हैं, यह बताया गया। माता पिता ने जो जिसमानी दिमागी व हार्दिक योग्यता दी है, वह कितना बड़ा उपकार है। हमारे लिए वह कैसे खून पसीना बहाते हैं। फिर उन्होंने अपने माता पिता की कुर्बानी का वर्णन किया। गुरु महाराज हमारा माता पिता के साथ श्रद्धा, कृतज्ञता वा हमदर्दी भरा सम्बन्ध बनाते हैं। हमने तो माता पिता को जी कहना वा प्रणाम करना भी नहीं सीखा था। उनको दुख वा तसीहे देकर कसाई बनना उनका निरादर वा घोर अपमान करना था। परन्तु कसूर उनका देखना था। हमारे भेड़िए रूप को गुरु ने बदला है, उसे कम हानिकारक बनाया है। हमें माता पिता का रूप दिखाया है उनकी कुर्बानियाँ दिखाई हैं। उनके प्रति हमारे निरादर वा अपमान मूलक व्यवहारों को दिखाया है। हमें माता पिता का महान रूप देखने, गुरु के बाद उनको ऊंचा स्थान देने, उनकी सेवा के अमृत को पीने की अत्यन्त आवश्यकता है। तभी हम सही अर्थों में इस सम्बन्ध को सार्थक बना सकते हैं। इसके बाद

भाव प्रकाश

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी :- गुरु महाराज का धन्यवाद करने के लिए शब्द नहीं हैं। उन्होंने जंगल में मंगल कर दिया है। हमारे खेतों से रेत के टीले तो हट गए, परन्तु हमारे हृदयों में झाड़ियां और कांटे भरे पड़े हैं, उनको गुरु दूर करते हैं। मैं एक नालायक बेटा हूं। पढ़ाई के समय मुझे

खुला खर्च मिलता था। जो मांगता वही मिलता। मैं बहुत खुश रहता। मैं अपनी इच्छा अनुसार खाता, पीता और पहनता। मेरी एक अलग पहचान होती थी। अब मैं बहुत दुखी होता हूं कि उनकी ईमानदारी कमाई को मैं अपनी गलत आदतों पर बर्बाद करता रहा। शराब पीना, फिल्में देखना फजूल खर्च में पैसा निष्फल गंवाता था। इसका मुझे तनिक भी बोध नहीं था। जब गुरु की कृपा से यह समझ आने लगा तो बहुत दुख होने लगा। मां गोबर के भारी टोकरे उठाकर दूर फैंक कर आती, पिता जब खेत से आते तो माता बैलों को नलका चलाकर पानी पिलाती। सख्त जान तोड़ मेहनत करती। पिता जी थरैशर पर काम करते। तो उनकी उंगलियों से खून बहने लगता। उस कमाई से मुझे पाला गया है। उन्होंने कभी किसी के साथ एक पैसे की बेईमानी नहीं की। किसी का पानी अपने खेत को नहीं लगाया। किसी के साथ ज्यादती नहीं की। पूर्ण शुद्ध कमाई उच्च व नेक कामों में खर्च होनी चाहिए थी, परन्तु मैंने वह शराबों में बर्बाद की। उनका अनादर व तिरस्कार किया अब दुखी होने वा पश्चाताप करने के भिन्न कुछ नहीं कर सकता। मुझ अन्धे को वह अच्छे तो क्यों लगने थे, उल्टा बुरे लगते थे। उन्होंने सारी रात मुझ शराबी के सिर पर पानी डाल डालकर और मालिशें करके बचाया है। इस प्रकार कई बार बचाया है। उन्हें दुख देने की मेरी कई घटनाएं हैं। उनकी गिनती नहीं हो सकती। अब उनके पहाड़ जितने उपकार और अपनी पहाड़ जितनी गल्तियां नज़र आती हैं। प्रतिदिन उनको प्रणाम तो करता हूं परन्तु भाव उतने गहरे नहीं होते। उनको दुखी नहीं करता, उनकी सेवा भी करता हूं, बेटा मुझे न्यूज़ीलैंड बुलाता है, पर उनकी सेवा के साथ बन्धा हुआ हूँ। माता पिता का ख्याल रखने के सम्बन्ध में मेरे बेटे और भतीजे अबोधी हैं। वह मेरी गैरहाजरी में उन्हें सम्भाल नहीं सकते। मैं और मेरी धर्म पत्नी पासपोर्ट के फार्म लेकर भरने गए। परन्तु मैंने नहीं भरा, पत्नी का भरवा दिया। मैं माता पिता को छोड़कर नहीं जा सकता।

मेरी यह प्रार्थना है कि गुरु महाराज मुझे मेरी गुस्ताखीयां और सताने वाले काम दिखाते रहें। मुझे मेरी औकात वा कीमत दिखाते रहें, ताकि मेरी अकल ठिकाने रहे। जितना उनका उपकारी रूप है, वह अधिक से अधिक दिखता रहे। उनको श्रद्धा भाजन कहने से ही मन भर जाता है। वह हमारे ऊपर उपकार करतें हैं परन्तु बदले में कुछ नहीं चाहते। माता पिता के घाटे की कभी, भरपाई नहीं हो सकती। गुरु महाराज हमें अन्धा बनने से बचाए रखें। हम बेटे कहलाने के सच्चे हकदार बन सकें। मैं उनका शुक्रगुज़ार बेटा बन सकूं, यही लालसा है।

गुरुदेव राज जी :- गुरु की कृपा वा बरकतों का ब्यान करना कठिन है। मैं माता पिता के साथ बहुत निम्न प्रकार का व्यवहार करता रहा हूं। पाकिस्तान से आकर जो मुश्किल माता पिता ने झेली है, याद करके उनके आगे झुक जाता हूं। किस प्रकार बैल गाड़ीयां खीचीं, मेहनत, कड़ी मेहनत का नजारा बहुत सुन्दर है। हिस्से पर ज़मीन ले ली, हाथों से उसमें झाड़ फूंस निकाला, तैय्यार करके उसमें धान लगाए, हमारे लिए जमीनें बनाई। 2 एकड़ से 15 एकड़ का मालिक बनाया। उपकार तो क्या देखने थे, उनकी बेइज्जती करके बिठा देता था कि आपने हमारे लिए क्या किया है? बेअन्त

दुखी किया है। वह अपना दुख भी मेरे पास बताते नहीं थे। अजीत सिंह जी के पास बताकर मन हल्का कर लेते थे। मेरी इन्तजार में तड़पते रहते थे। मैं उनके साथ बहुत दुर्व्यवहार करता था। माता जी बिमार होते, पर मैं लम्बी तानकर सो जाता था। कल ही सभा में चाचा जी का 30 वर्ष पुराना उपकार नज़र आया। चाचा जी ने पिता जी के लिए डाक्टर बदल कर अच्छे डाक्टर के पास ईलाज करवाया। चाचा जी ने पिता जी को मौत से बचा दिया। हम रुल रुलाके खत्म हो जाते, यदि हमें यह दर न मिलता। यहां उपकार गहराई से समझ में आए हैं। अब गांव में जाकर चाचा जी को प्रणाम भी करूंगा और उन्हें कुछ भेंट भी दूंगा।

श्रीमान जगीर सिंह जी :- मुझे भी अपनी योग्यता के अनुसार कुछ लाभ हुआ है। माता पिता की मेहरबानियां और कुर्बानियां नज़र आई हैं। मेरे उपकारियों ने मुझे इस दर से जोड़कर बहुत उपकार किया है। माता पिता से सम्बन्ध बहुत बेहतर हुआ है। मैं ने एक बार पिता जी के साथ झगड़कर ईंट उठा ली, वह अपनी हरकत अब मुझे दुखी कर रही है। अपना पागलपन नज़र आ रहा है। मैं गुरु महाराज की कचहरी में अपना यह गुनाह कबूल करता हूं कि मुझे कच्चा मांस खाने वाले को बचा लिया। पिता जी को जो घृणा करता था, अब वह घृणा कम हुई। काश! मैं माता पिता की सेवा करने के योग्य हो जाऊं। गुरु का प्रचार करने के योग्य हो जाऊं। मेरे गुरु ने मेरे बिगड़े सम्बन्ध सुधारे हैं।

श्री मोनू जी :- तीन दिन की सभाओं से काफी उच्च असर प्राप्त हुए हैं। मैं 25-26 वर्ष का बिल्कुल निकम्मा हूं। माता पिता की कोई सेवा नहीं करता। माता पिता ने मुझे जैसे बचाया है, वह घटना याद आ रही है। पिता को बूढ़ा कहता हूं। नशों और मिथ्या से बचा हूं। मैं पूजा पाठ करता हूं, परन्तु बहुत बदतमीज़ हूं। डाक्टर साहिब से क्षमा मांगता हूं।

श्री राजेन्द्र कुमार जी :- मैं शराब पीता था और घर में कोई पैसे नहीं देता था। मैं पिछले साल ही यहां आया था। अब तक शराब से बचा हुआ हूं। श्रीमान साहिब की मेहरबानी सामने आई है। 20 वर्ष तक शराब पीता रहा। मेरी पत्नी बहुत सेवा करती थी। यहां शराब छोड़ने नहीं आया था। मेरा प्रोग्राम था कि तीन दिन छोड़कर फिर शुरू कर दूंगा। परन्तु गुरु के प्रभाव बहुत बलशाली हैं। मैं श्रीमान जी को भी ऐसे ही समझाता था कि यह बूढ़ा ऐसे ही परेशान कर रहा है। पत्नी का उपकार है कि उसने मुझे त्यागा नहीं।

श्रीमान जीत सिंह जी :- गुरु की कृपा द्वारा श्रीमान जी ने मुझे मिथ्या से निकाला है। मन्दिर बनाने का सब ने संकल्प किया था। श्रीमान गुरुदेव राज जी की माता ने हमेशा उच्च जीवन से हमारा भला किया है। माता जी से बहुत प्यार मिला है। उनके जीवन से बहुत उच्च असर मिलते हैं। एक दिन अशोक जी को जरदा छोड़ने की प्रतिज्ञा करने के लिए कहा उसने छोड़ने का प्रण किया। बड़े दर्द से भरकर यह अपील थी। श्रीमान जी हमारे भले के लिए ही हमारी सेवा करते हैं।

अनिल शर्मा जी :- मैं आज से शराब, बीड़ी, सिगरेट छोड़ने का प्रण करता हूं।

श्रीमान राधे श्याम जी :- मैं सारी उमर

के लिए शराब छोड़ने का प्रण करता हूं। बीड़ी छोड़ने की भी कोशिश करूंगा।

चौधरी कवंरपाल जी: – सारी उमर शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा करता हूं।

चौधरी सुरेन्द्र जी :– बीड़ी, सिगरेट, शराब सारी उमर के लिए छोड़ने की प्रतिज्ञा करता हूं।

श्रीमान तेज राम जी शर्मा: – गुरु के प्रभाव बहुत बलशाली हैं, परन्तु शर्त यह है कि हमारे दिल ग्रहण करने को तैयार हों। पिता जी की सेवा में मैं आधा वैद्य बन गया हूं। पिता जी राजी हो गए। उनको दमा हो गया था। पिता जी का हुक्का छुड़वाया। मैंने पिछले महोत्सव पर पांच जनों को बीड़ी छुड़वाने की प्रतिज्ञा की थी। खुशी की बात है कि अब तक 7 जनों से बीड़ी छुड़वा चुका हूं। सत्संग की बड़ी महिमा है।

श्रीमान नरेन्द्र जी धीमान :– मेरी जहां दुकान हैं, वहां पर एक किसान आया, जो पशु को तंग कर रहा था। मैंने उसके बैल को चारा दिया और पानी पिलाया और उसके ऊपर भी पानी डाला। यह गुरु की कृपा है।

श्रीमान सीता राम जी संगरूर : – माता जी का रूप नज़र आया है। यहां से हार लेकर गया, उन्हें हार डाल कर प्रणाम किया, पहले उनसे बोलता नहीं था। माता जी ने सोलन जाने के लिए तम्बाकू छोड़ दिया। गुरु महाराज का बहुत धन्यवाद करता हूं।

(एक पत्र भाव प्रकाश का आगे दे रहे हैं)

समय बहुत हो चुका था, सभा के अन्त में जिन बच्चों के माता पिता उपस्थित थे उन्होंने उनका फूलों के हारों से अर्चन किया और चरणों में प्रणाम किया। जिनके घर में माता पिता थे उनके डालने के लिए कुछ जन हार लेकर गए। बहुत ही सुन्दर दृश्य था।

बाद में जय ध्वनि के साथ यह सभा समाप्त की गई।

एक हाज़रीन

पेज़ नं 2 का बाकी

प्राप्ति के लिए मिथ्या, पाप छोड़ने पड़ेंगे। नशे छोड़ने पड़ेंगे। व्यवहार उच्च बनाने पड़ेंगे। उच्च संगत में स्कूल की तरह बार-बार आना पड़ेगा। फिर जितनी योग्यता है, उतना धर्म आएगा। यह धर्म पाने का नियम है।

शाम को 4 बजे फिर एक सभा रखी गई। इसमें बताया गया कि जिन्दा संगत क्या होती है और मुर्दा संगत क्या होती है। जिन्दा संगत अधिकारी जनों में उच्च परिवर्तन पैदा करती है। नीच जीवन मिटाती है। उच्च जीवन पैदा करती है। देवात्मा की शक्ति संगत में आश्चर्याजनक काम करती है। कितनी ही जिन्दा उदाहरण दिए गए। हाजरीन की सहमति से अगले दिन सवेरे फिर सभा रखी गई।

8 फरवरी सुबह की सभा यहां पर आखरी सभा थी। 5-6 नये जन आकर शामिल हुए। सभा में बताया गया कि पाप का सागर छलांगें मार रहा है। इन्सान इसमें गरक हो रहे हैं। उदाहरणों के द्वारा यह समझाया गया। केवल देवात्मा ने पाप का राज खत्म करने का बीड़ा उठाया है। उनके भीतर ही यह सामर्थ्य है कि पाप का नाश कर सके। पापी रूहों को उनकी शरण में आकर ही बचना सम्भव है। उनके साथ जुड़कर अपना भला करना चाहिए।

यहाँ 200 रू० दान वा 100 रू० चन्दा अखबार प्राप्त हुए। शाम को श्रीमान की कल्याण पहुँच गए।

(एक सेवक)

देवात्मा का सच्चा सेवक बन सकूं

बहुत बहुत सन्मान के योग्य सभापति जी,

सन्मान सहित सत्य देव की जय।

इस बार सभाओं में बैठकर मुझे बहुत लाभ होता रहा है। सब ही सभाऐं हृदय को स्पर्श करती रही हैं और दिल को हिलाती रही हैं। नीच भावों से प्रेरित होकर नीच क्रियाओं और नीच जीवन के हानिकारक परिणामों से मन भयभीत होता रहा। गुरु महाराज की निराली शिक्षा, निराली संगत और निराले दर की कुछ न कुछ जरूरत और कदर अनुभव हुई। सभापति जी के द्वारा दिए गए उदहरण और नीच जीवन के जो नतीजे पैदा होते हैं और इन्सान की बर्बादी होती है, बार-बार यह नज़ारे सामने आते रहे हैं। बगैर गुरु के हमारा भला नहीं।

श्रीमान जी ने बताया कि धर्म क्या है? कुछ न कुछ सोझी आई। नीच भाव खत्म करके उच्च भाव पैदा करने से ही धर्म का मार्ग खुलता है। मोटी मोटी बुराईयां दूर करके भली गतियां करके ही जीवन सवंरता है। मुझे अनुभव हुआ है कि मैं न तो पूरा ईमानदार हूं, न शुक्रगुजार हूं। बार-बार अपनी नीचताएं सामने आती रहीं। बार-बार गुरु के दर की महिमा सामने आती रही। मुझे दुनयवी समानों के सामने गुरु की संगत की भूख अंश मात्र भी नहीं है।

मुझे गुरु का कारज एक हस्पताल की तरह लगता है जिसमें मनुष्य के शारीरिक, मान्सिक और अध्यात्मिक रोगों का ईलाज होता है। गुरु महाराज के दर पर उनकी संगत में बैठते-बैठते सब रोग दूर हो जाते हैं। और हर अधिकारी जन तन्दरुसती पाता है और सब प्रकार की बरकतें मिलती हैं। जो-जो जन गुरु महाराज की शरण से दूर होते हैं, वह घाटे, दुख और बर्बादी के शिकार होते हैं।

मुझे सभाओं से माता पिता के उपकारों का एहसास होता रहा है। मेरे माता पिता ने जो मुझ पर उपकार किया है, वह घटना बिल्कुल ही अलग है। मैं अभी-अभी वर्ष का ही था कि मुझ को बिमारी हो गई, जिससे मेरे बचने की कोई आशा नहीं थी। ऊपर से गरीबी, पैसे प्राप्त करने का कोई साधन नहीं था। ऐसे उन्होंने इतनी दलेरी दिखाई कि डाक्टर के पास जाकर कहा कि मेरा बच्चा बचना चाहिए चाहे मेरी जान चली जाए। मैं महसूस करता हूं कि मेरे माता पिता ने तो एक बार नहीं, दो बार मुझे जन्म दिया है। जो मैं हजार बार जन्म लेकर भी नहीं उतार सकता। यह कर्जा गुरु महाराज की ज्योति में ही नज़र आया है। माता पिता ने सुन्दर शक्ल वा अच्छी सेहत दी, जिस कारण मैं रोज़ी रोटी कमा सका वा अपने बच्चों की पालना कर सका। गुरु महाराज और माता पिता की जो कृपा मुझ पर हुई है, वह कर्मचारियों की सहायता से जो प्रेरणा मिली, सुबह प्रतिदिन वह ध्यान में लाता हूं और प्रणाम करता हूं। माता पिता की सेवा का कुदरत ने ही मुझे मौका नहीं दिया, जिसका मुझे बहुत दुख रहता है।

पहले से ही मेरा परिवार मिथ्या में डूबा हुआ था। जोत जगाने, मलेरकोटले वाले बाबा के यहां चिराग आदि जगाने की प्रथा थी। श्रीमान जी ने मिथ्या ऊपर सभा करवाई। अच्छा बल मिला। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने जोत उठाकर बाहर फैंक दी। अब मेरे परिवार में तावीत धागे नहीं किए जाते।

गुरु की कृपा वा कर्मचारियों की सहायता से मुझे बहुत राहत मिली है। मेरी इच्छा है कि मैं गुरु दर के साथ जुड़ सकूं और उसकी कदर कर सकूं। मेरा ध्यान अपने अवगुणों की तरफ जाता रहे। पहले भी संगत के साथ जुड़कर लाभ हुआ है, और लाभ उठा सकूं। गुरु का हानिकारक सेवक न होकर सच्चा सेवक बन सकूं। अपनी पीली पगड़ी की पहचान, इसके मूल्य को बरकरार रख सकूं।

(तेज राम कल्याण)

चण्डीगढ़ कोचिंग सेंटर में माता पिता दिवस

20 जनवरी 2007 को चण्डीगढ़ में Dr. Khera's Chandigarh Coaching Centre के छात्र-छात्राओं ने एक अद्वितीय समारोह आयोजित किया। यह समारोह सैक्टर 18 में स्थित टैगोर थियेटर में रखा गया। समारोह की विशेषता उसके नाम में झलक जाती है - "माता पिता संतान दिवस"। इस Function में Chief Guest Punjab University के Vice Chancellor माननीय Dr. R.C. Sobti थे। देवधर्म मिशन के मंत्री श्रीमान बलदेव सिंह जी भी इसमें शमिल हुए।

Function में माता-पिता और संतान के गहरे, पर सूखते हुए रिश्ते के महत्त्व पर ज़ोर डाला गया। माता-पिता के प्रति बच्चों में आदर और स्नेह पैदा करने के लिये कई Enlightening items रखे गये। यह आश्चर्यजनक बात थी कि साढ़े चार घंटे के इस समारोह में छात्र-छात्राएं, उनके अभिभावक और अध्यापक-गण अपनी कुर्सियों पर जड़े बैठे रहे। अन्य समारोहों के मुकाबले Tagore Theatre में पैर रखने की भी जगह नहीं थी बल्कि और कुर्सियां लगा कर मेहमानों को बिठाया गया।

Function का आरंभ +1 की छात्रा चंदा के अति धार्मिक गीत "माँ, प्यारी मां, गोद में तेरी खेला बचपन मेरा- -" से हुआ। इस गीत ने तो वी. सी. साहब तक को भाव-विभोर कर दिया।

"जिंदा है औरंगजेब" नाम के नाटक के द्वारा दर्शाया गया कि मां बाप को दुख देने वाला कभी सुखी नहीं रह सकता तथा अंत में ऐसे व्यक्ति के पास सिवाय पछतावे के कुछ नहीं बचता। हम में से भी बहुत सारे जनों में औरंगजेब जिन्दा है, जब हम माता पिता को सताते हैं।

अत्यंत करूणाजनक नाटक "माँ" में एक ऐसी मां के त्याग की कहानी थी जिसने अपने बेटे के लिये अपनी आंखों की ज्योति का दान कर दिया। उसे अच्छी उच्च शिक्षा देने के लिये उस मां ने अपनी किडनी बेच दी ताकि उसका बेटा अच्छे कॉलेज में पढ़ सके। इन नाटकों को Coaching Centre के Chemistry के lecturer श्री अश्विनी ओहरी जी ने निर्देशित किया था और भूमिकाएँ Coaching Centre के छात्र-छात्राओं ने निभाई थीं। बच्चों ने बड़ी ही सराहनीय अदाकारी दिखाई। कड़ी Competition की तैयारी के schedule से समय निकालकर ये तैयारियां की गई थीं। नाटकों के अंत में play में participate करने वाले छात्र-छात्राओं ने अपने भाव-प्रकाश किये। विशाखा नाम की छात्रा का मानना था कि इस play की तैयारी करते करते उसने realise किया कि उसने कितनी बार अपने माता पिता का दिल दुखाया है और आगे से एक अच्छी संतान बनने का वचन लिया। मिताली का मानना था कि हम कई बार अनजाने में कुछ गल्तियां कर जाते हैं जिन्हें भूल पाना मुश्किल होता है। पर यदि हम माता पिता का आदर करें, उन्हें दुख न पहुँचाये तो यही हमारा पछतावा है।

"माता पिता की सेवा दिल से किया करेंगे।
नक्शे कदम पर अपने गुरु के चला करेंगे,
वो गोदियों में अपनी हरदम उठाने वाले।

वह दूध और मलाई, मक्खन खिलाने वाले,
वह प्यारी प्यारी बाते करके हँसोने वाले।
हमदर्द और रक्षक दुख से बचाने वाले,
उपकार उनके ऐसे हरदम जपा करेंगे।
माता पिता की सेवा हर दम किया करेंगे,

इस Group Song ने सबके दिलों को छू लिया और सभी की आंखें नम हो गई।

मनिंदर नाम की छात्रा ने अपनी speech में यह कहा कि उसके माता पिता ने उसकी जरूरतों और उसे अच्छी शिक्षा देने के लिये बहुत कुछ किया पर उसने full sincerity और dedication से competition exams की तैयारी नहीं की। Speech तैयार करते करते उसे realisation हुई कि वो गलती कर रही थी और उसके मन में मां बाप के प्रति श्रद्धा बढ़ी और इस positive feeling का उसकी पढ़ाई पर भी गहरा असर पड़ा और वो अब बेहद concentration से पढ़ने लगी है।

पंकज ने अपनी speech में बताया कि किस तरह उसके पिता जी उसके स्कूल जाने से पहले रोज उसके जूते पालिश कर देते थे। दिवाली पर अपने लिये एक Undergarments की जोड़ी लाये जबकि सबके लिये नए-नए कपड़े लाये। Himachal के remote region में वो जब posted थे तो भी उसे रोज फोन किया करते थे। मां कई बार बच्चों को नाश्ता करा देती थी। और खुद भूखी-प्यासी ही काम पर चली जाती थी।

साक्षी ने सबके बीच ये माना कि घर के सुखों और माता-पिता के प्यार का मूल्य आज उसने उनसे दूर होकर जाना है। उसने Dr. Khera को धन्यवाद दिया कि उन्होंने इस तरह का function आयोजित करके बच्चों में अपने माता और पिता के प्रति कितना भाव परिवर्तन और सजगता जगाई है।

संदीप नाम के छात्र ने "कांधे पर काँवर लेकर चला मैं, क्यूं न करूँ मैं गुमान" के जरिये सबको श्रवण कुमार की असीम मातृ-पितृ भक्ति की याद दिलाई।

अनंतिका की स्वंय रचित कविता हृदय स्पर्शीय थी।

"काश हम छोटे बच्चे होते
मन के बिल्कुल सच्चे होते
मां की गोद में सर रख कर सोते
काश हम छोटे बच्चे होते
पर समय ने हमारी भावनाओं को सुला दिया है
मां बाप के प्यार को हमले भुला दिया है
बचपन में जो बातें उनकी लगती थी प्यारी
फिर क्यूं लगती है वही अब व्यर्थ सारी

अध्यापकगण भी समारोह में शामिल हुए और Physics के lecturer श्री भूपिंदर ने solo song "माता और पिता के उपकार सुनाऊ मैं,
उनकी सेवा में ही तन मन और धन
लगाऊं मैं" प्रस्तुत किया।

अध्यापक गण ने विद्यार्थियों के साथ मिल कर परम पूजनीय भगवान देवात्मा द्वारा रचित भजन भी प्रस्तुत किया जिसके बोल थे।

माता पिता : हे प्यारी संतान हमारी, सदा तुम्हारा हो कल्याण

बच्चे : श्रद्धा भजन माता-पिता जी श्रद्धा भाव करूं उपहार।

पूरे समारोह का मुख्य आकर्षण श्रीमान बलदेव सिंह जी का अत्यंत enlightening lecture था। उन्होंने समाज में मौजूद हर उस जन को अंधा बताया जो अपने माता पिता के उपकारों को

न समझते हुए उनका निरादर करते हैं। उन्होंने कई सच्ची घटनाओं के ज़रिए माता पिता के त्याग के उदाहरण दिये जिसमें जापान के चिड़िया घर में शेरनी के मुंह से स्वयं को गंभीर रूप से घायल करके अपने बच्चे को बचाने वाले पिता की घटना बहुत हृदय स्पर्शीय शब्दों में सुनाई। उन्होंने वहां मौजूद छात्र - छात्राओं से वचन लिया कि वे जब भी अपने माता पिता से मिलें तो सादर दंडवत करते हुए उनके चरणों में लेट कर उन्हें प्रणाम करें। उन्होंने आग्रह किया कि बच्चे अपने माता पिता को कभी दुख न पहुँचायें।

अंत में Medical और Engg. की परीक्षाओं में Top rank लेकर सफल होने वाले बच्चों ने फूल मालाएं पहना तथा दंडवत प्रणाम कर अपने माता पिता को सम्मानित किया।

नकारात्मक विचारों को निकाल बाहर करें

मानसिक शांति हासिल करने का मूलभूत तरीका है अपने मस्तिष्क को खाली करने का अभ्यास। अपने मन के सारे डर, नफरत, असुरक्षा, अफसोस और अपराधबोध की भावनाएं बाहर निकालने का अभ्यास करें। आप अपने मस्तिष्क को सचेतन रूप से खाली करने की कोशिश कर रहे हैं, सिर्फ इसी बात से राहत मिल जाती है। क्या, आपने महसूस किया है कि जब आप अपनी चिंताओं को किसी विश्वासपात्र व्यक्ति को बताते हैं, तो आपके दिल का बोझ काफी कम हो जाता है? परन्तु यह ध्यान रखें, केवल मस्तिष्क को खाली करना ही काफी नहीं है। जब मस्तिष्क खाली हो जाएगा तो कोई न कोई चीज अंदर आएगी। मस्तिष्क में लंबे समय तक शून्य की स्थिति नहीं रह सकती। यह संभव ही नहीं है कि आपका मस्तिष्क हमेशा खाली ही बना रहे। अगर आप अपने मस्तिष्क में कुछ नया नहीं भरेंगे, तो एक बार फिर से वही पुराने दुखद विचार आपके मस्तिष्क के दरवाजे से भीतर घुसने की कोशिश करेंगे। जिन्हें आपने वहां से निकाल फेंका था।

इसे रोकने के लिए अपने मस्तिष्क में तत्काल रचनात्मक और स्वस्थ विचार भर लें। फिर जब आपने पुराने डर, नफरत और चिंताएं, जो आपको लंबे समय से, एक बार फिर सताने की कोशिश करेंगे तो वे देखेंगे कि आपके मस्तिष्क के दरवाजे के बाहर बोर्ड लगा है 'जगह नहीं है।' हालांकि वे फिर अंदर घुसने की कोशिश करेंगे परन्तु आपने जिन नए व स्वस्थ विचारों को वहां बैठाया है, वे आपके मस्तिष्क के किले की रक्षा करेंगे और इन बाहरी नकरात्मक शत्रुओं को परास्त कर देंगें। कुछ समय बाद पुराने विचार पूरी तरह हार मान लेंगे और आपको हमेशा के लिए छोड़कर चले जाएंगे। आपको स्थायी रूप से मानसिक शांति मिल जाएगी।

डा. स्टैनले कॉब

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री - देव - धर्म - मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, # 68, Shop No. 3, Badheri 41-D, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21 - डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts